

सामान्य अध्ययन द्वारा प्राथमिक स्तर के बच्चों में संवाद, समझ और सामर्थ्य का विकास

आनंद कुमार मिश्र*

अपनी माँ और अभिभावकों की गोद से निकलकर प्राथमिक स्कूल पहुँचे बच्चों में आत्मविश्वास, जिज्ञासा और उसके मनोभावों को संबल देकर उन्हें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करना हमेशा से चुनौतीपूर्ण कार्य होने के बावजूद शिक्षकों की प्राथमिकता में रहा है। चुनौतीपूर्ण इसलिए क्योंकि प्रायः तमाम विसंगतियों के कारण बच्चों में संकोच और भय देखा जाता है। ऐसे में उनके आत्मविश्वास और जिज्ञासा को बढ़ाने की आवश्यकता महसूस होती है। बच्चों में भाषा, संवाद और संप्रेषण भी अपेक्षित स्तर पर नहीं दिखता है। ऐसे में इन कमियों को दूर करने के लिए एक ऐसे शिक्षण टूल की ज़रूरत होती है जो उपर्युक्त कमियों को दूर कर बच्चों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर सके। विद्यालय में सामान्य अध्ययन शिक्षण (जनरल स्टडी टीचिंग) एक ऐसे ही टीचिंग टूल के रूप में इस्तेमाल होता है। यह बच्चों में आत्मविश्वास व जिज्ञासा उत्पन्न करते हुए भय व संकोच को दूर करता है। साथ ही भाषा के जुड़ाव के साथ बच्चों में संवाद और संप्रेषण की कला का विकास कर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करता है। सामान्य अध्ययन के शिक्षण की मदद से बच्चों में संवाद, समझ और सामर्थ्य का विकास देखने को मिला। शोध को संक्षेप लेख के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। यह लेख दर्शाता है कि बच्चों में सामान्य अध्ययन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

प्राथमिक विद्यालय के अधिकांश बच्चों की पृष्ठभूमि ग्रामीणांचल से जुड़ी होती है। आर्थिक विपन्नता, मूलभूत सुविधाओं की कमी, जागरूकता का अभाव एवं अपेक्षित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभाव होने के कारण अनेक बच्चे अधिगम अंतर (लर्निंग गैप) से जूझ रहे होते हैं। प्रायः यह भी देखने में आता है कि परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों में विभिन्न कारणों से आत्मविश्वास, सीखने

में अरुचि एवं जिज्ञासा की कमी होती है। सभी जानते हैं कि आत्मविश्वास एवं जिज्ञासा स्कूली शिक्षा एवं बच्चों के विकास संबंधी महत्वपूर्ण सोपान हैं। शिक्षा न केवल उसे अपने वातावरण से अनुकूल करने में सहायता देती है, वरन उसके व्यवहार में ऐसे वांछनीय परिवर्तन भी करती है कि वह अपना और अपने समाज का कल्याण करने में सफल होता है। (पाठक, 1982)। बच्चों में आत्मविश्वास एवं कुछ नया जानने की

* शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय मल्लूपुर विकास खंड एरायां, जिला-फतेहपुर, उत्तर प्रदेश

इच्छा ही नहीं होगी तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया भी प्रभावी नहीं होगी। सीखने में अरुचि होने से बच्चों के विकास और कक्षानुरूप दक्षताओं पर नकारात्मक असर पड़ता है। इस तथ्य पर मंथन हुआ कि आखिर ऐसा कौन सा उपाय किया जाए जिससे बच्चों में आत्मविश्वास, जिज्ञासा एवं सीखने में रुचि को बढ़ावा देने के साथ भाषा से जुड़ाव, बच्चों में संवाद एवं संप्रेषण शैली का विकास हो तथा लर्निंग गैप को पाटने में भी तथा मदद मिल सके। किसी ऐसे उपाय की आवश्यकता महसूस हुई जो बच्चों को सरल एवं सहज लगने के साथ ही किसी शिक्षण तकनीक से जुड़ी हो। इन बिंदुओं पर विचार करने के उपरान्त अभिनव शिक्षण तकनीक के अंतर्गत एक ऐसा शोध तैयार किया गया जो बच्चों के शैक्षणिक एवं मानसिक विकास में सहायक सिद्ध हो। प्रस्तुत शोध में दूसरे विषयों का भी समेकन किया गया ताकि कक्षा शिक्षण के दौरान सीख व समझ को विषय व प्रकरण पढ़ने के समय प्रयोग किया जा सके। शोध को जनरल स्टडी टीचिंग नाम दिया गया क्योंकि इसमें सामान्य विज्ञान, गणित, भूगोल, इतिहास, सामान्य ज्ञान और अन्य विषय शामिल किए गए हैं। इसके द्वारा बच्चों को विभिन्न विषयों की बुनियादी जानकारी देने के साथ उनके जिज्ञासा स्तर में वृद्धि एवं भय, संकोच व आत्मविश्वास की कमी को दूर किया जाता है। बच्चा जब उससे पूछे जाने वाले प्रश्नों का स्वयं जवाब देने लगता है तो निश्चित तौर पर उसके आत्मविश्वास, जिज्ञासा एवं सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है तथा अनेक विषयों की बुनियादी समझ विकसित होती है। आत्मविश्वास हासिल करने के बाद बच्चे स्वयं इस विशेष कक्षा का संचालन करने लगते हैं। संचालन के दौरान उनमें भाषा की समझ एवं संवाद व संप्रेषण की क्षमता स्वयमेव बढ़ने लगती है।

उद्देश्य

प्रायः यह देखने में आता है कि प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूली बच्चे विद्यालय में स्वयं को सहज महसूस नहीं करते हैं। एक अनदेखा और अनचाहा भय, दुविधा एवं हिचकिचाहट उन्हें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पूरी तरह से शामिल नहीं होने देती है। इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. अधिगम प्रक्रिया को सरल एवं सुगम बनाते हुए बच्चों के आत्मविश्वास व जिज्ञासा स्तर में वृद्धि।
2. भय को दूर करना एवं परस्पर संप्रेषण एवं संवाद शैली के द्वारा बच्चों में सरलता के साथ विषय ज्ञान की समझ बेहतर करना।
3. बच्चों में मानसिक तनाव को कम करते हुए सहज तरीके से सीखने के लिए प्रेरित करना।
4. बच्चों में भाषा का विकास एवं विषयों की समझ विकसित करना।
5. सामान्य अध्ययन के शिक्षण द्वारा स्कूली बच्चों में अन्य विषयों की समझ विकसित करना।
6. प्रयोग एवं प्रदर्शन द्वारा स्कूली बच्चों को 'करके सीखने' के लिए प्रेरित करना।

शोध की आवश्यकता

बच्चों में अपर्याप्त विषय का ज्ञान उनके आत्मविश्वास में कमी लाता है और ज्ञान विस्तार में भी बाधा बनता है। विभिन्न कारणों से बच्चों की क्षमता का पूरा इस्तेमाल नहीं होने से लर्निंग गैप बढ़ता रहता है। बच्चों में भय रहता है कि कहीं उनके शिक्षक उनसे कोई सवाल न पूछ लें। कहीं कक्षा में डाँट न मिल जाए। बच्चों में अपेक्षित ज्ञान न होने के कई कारण हो सकते हैं। समस्या का अंग एवं इसके कारणों को खोजने की बजाए समाधान का हिस्सा बनना बेहतर

समझा गया। बच्चों के आत्मविश्वास को जागृत करने व उनमें जिज्ञासा का भाव पैदा करने के लिए यह शोध अमल में लाया गया। बच्चे जब सवाल का जवाब देने लगेंगे तो उनमें स्वाभाविक रूप से आत्मविश्वास पैदा हो जाएगा। उनका डर भी धीरे-धीरे दूर होने लगेगा। फतेहपुर जिले के प्राथमिक विद्यालय मलूकपुर में इस शोध का प्रयोग किया गया है। प्रयोग के दौरान जो बच्चे प्रश्न पूछने पर दुबकते थे, उनमें जवाब देने की होड़ पैदा हो गई। प्राथमिक स्तर की कक्षाओं के लिए यह शोध बेहद उपयोगी साबित हुआ।

शोध रचना

‘शिक्षा अधिकाधिक सृजनात्मक होती जा रही है। एक समय था जबकि शिक्षा केवल शिक्षा के लिए थी। आज का युग इसे नहीं मानता है’ (पाल, 2006)। विद्यालय में सामान्य अध्ययन के शिक्षण को लागू करने से पहले इस तथ्य पर चिंतन किया गया कि आखिर ऐसी कौन सी विधि अपनाई जाए जिससे बच्चों में जिज्ञासा एवं आत्मविश्वास के स्तर के साथ उनमें सीखने की रुचि को पैदा किया जा सके। काफी सोच विचार कर यह तय किया कि सभी स्कूली बच्चों के लिए एक ऐसी प्रश्नावली तैयार की जाए जो उनके परिवेश और विषय ज्ञान से किसी न किसी रूप में जुड़ी हो। हो सकता है कि वह सीधे तौर पर सभी प्रश्नों से सीधा संबंध न स्थापित कर पाएँ लेकिन इतना अवश्य है कि परिवार, समाज व समाचारों में इन पर बात होते हुए उन्होंने इनके बारे में सुना हो। इस आधार पर एक प्रश्नावली तैयार किए जाने का निर्णय किया। स्कूल में इस नवाचार को लागू करने के लिए सबसे पहले देश, राज्य व जिले के सामान्य ज्ञान के साथ भूगोल, इतिहास, विज्ञान

और गणित जैसे विषयों की मदद से एक प्रश्नावली तैयार की गई। इस प्रश्नावली को प्रतिदिन की प्रार्थना सभा का भाग बनाया गया। प्रार्थना सभा के उपरांत सभी कक्षाओं से युक्त सामूहिक कक्षा के बच्चों से संवाद स्थापित किया गया। उनके साथ सहज संवाद की नींव डालने के बाद विभिन्न बिंदुओं पर (ऐसे बिंदु जो बच्चों की शिक्षा, संस्कार और अधिगम प्रक्रिया से जुड़े हों) परस्पर चर्चा करते हुए सहज संवाद आरंभ किया गया। इसके उपरांत प्रश्नावली के अंतर्गत आने वाले करीब दो सौ प्रश्नों के जवाब प्रतिदिन बताने का निश्चय किया। विद्यालय की समय सारिणी में भी सामान्य अध्ययन शिक्षण को जगह दी गई। प्रतिदिन करीब 45 मिनट सामान्य अध्ययन के शिक्षण को दिए गए।

क्रियाविधि

सैंपल का चयन — प्राथमिक विद्यालय मलूकपुर के कक्षा 2 से 5 तक के सभी बच्चे

उपकरण — साक्षात्कार एवं अवलोकन द्वारा

डाटा संकलन का तरीका — प्रार्थना सभा के तुरंत बाद जब बच्चे मैदान में एकत्र रहते हैं तो उन्हें इस शोध प्रक्रिया का भाग बनाया गया। बच्चों से सहज संवाद की स्थापना प्राथमिक लक्ष्य रखा गया। सरल एवं सहज संवाद की शुरुआत होने के बाद तैयार की गई प्रश्नावली बच्चों के समक्ष प्रस्तुत की गई। प्रश्नों को बच्चों के समक्ष रखा गया ताकि वे प्रश्नों का जवाब मिलने से पहले अपने विचार प्रस्तुत कर सकें और उनसे अपना जुड़ाव कर सकें। बच्चों द्वारा जवाब देने के बाद उनकी त्रुटियों को त्वरित रूप से सुधार कर सही जवाब बताए गए। कई ऐसे प्रश्न जिनके जवाब करके सीखने प्रयोग पर

आधारित थे, उन प्रश्नों के जवाब प्रयोग के द्वारा दिए गए। उदाहरण के रूप में बीजों और पौधों के भागों की जानकारी अंकुरित बीज व पौधों को प्रदर्शित करके बताई गई। करीब 15 दिन तक प्रतिदिन यही क्रम चलता रहा। इसके बाद बच्चों से सामान्य अध्ययन के वही प्रश्न पूछे गए। जो उन्हें पिछले 15 दिन से बताए जा रहे थे। बच्चे धीरे-धीरे प्रश्नों का उत्तर देने लगते थे। कुछ प्रश्नों के जवाब गलत होने की स्थिति में शिक्षक उनके सही जवाब देकर उनकी गलती को प्यार एवं सहानुभूतिपूर्वक सुधार देते। कुछ दिनों बाद डरने वाले, संकोची एवं कम सक्रिय बच्चों को भी दर्जनों प्रश्नों के जवाब याद हो जाते और वे भी सवालों का जवाब देने के लिए लालायित होने लगते। इसके उपरान्त प्रश्नों की प्रकृति और दायरा बढ़ाया गया। सामान्य अध्ययन की यह सामूहिक कक्षा समूचे विद्यालय के माहौल पर सकारात्मक प्रभाव डालने लगी। ऐसे तमाम प्रश्न बच्चों के कक्षा शिक्षण के दौरान भी सामने आते तो उन्हें वह समझना बेहद सरल लगा क्योंकि उसकी जानकारी उन्हें पहले से ही थी। कुछ समय बाद प्रतिभाशाली बच्चे ही दूसरे बच्चों से प्रश्न पूछने लगे। समूह बनाकर भी ऐसा किया गया।

बच्चों को सामान्य अध्ययन शिक्षण के अंतर्गत बताए जाने वाले तथा बाद में उनसे पूछे जाने वाले प्रश्नों के कुछ उदाहरण अग्रलिखित हैं—

1. देश के प्रथम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा उपराष्ट्रपति तथा देश के वर्तमान राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा उपराष्ट्रपति आदि।
2. देश का नाम, कुल राज्य, 29वाँ राज्य एवं इसका पितृ राज्य, केंद्र शासित प्रदेश, देश की राजधानी आदि।
3. प्रदेश का नाम, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, कुल मंडल, कुल जिले आदि।
4. अपने मंडल का नाम, मंडल के अधीन आने वाले जिले, अपना जिला, कुल तहसीलें, अपनी तहसील, जिले के कुल ब्लॉक, तहसील के अंतर्गत ब्लॉक, अपना ब्लॉक, अपनी ग्राम पंचायत आदि।
5. राष्ट्रीय फूल, फल, पक्षी, पशु, चिह्न, वृक्ष, ध्वज, नदी, आदर्श वाक्य, आदर्श वाक्य कहाँ से लिया गया, राष्ट्रध्वज के रंग एवं इनके संदेश, राष्ट्रीय चिह्न कहाँ से लिया गया, चिह्न में क्या-क्या बना है? राजकीय पक्षी, फूल एवं पशु आदि।
6. राष्ट्रगान, गायन समय, मुद्रा, लेखक, राष्ट्रगीत एवं ध्वजगीत तथा इनके लेखक, सभी प्रमुख नारों एवं इनके प्रयोगकर्ता का नाम, राष्ट्रीय पर्व आदि।
7. देश कब आजाद हुआ, किससे आजाद हुआ, संविधान कब लागू हुआ, आजादी और संविधान लागू होने पर क्या मनाया जाता है, महात्मा गाँधी का जन्म, जन्म स्थान, राज्य, माता-पिता, बापू, राष्ट्रपिता, गाँधी जयंती आदि की जानकारी।
8. बाल दिवस कब और क्यों होता है, शिक्षक दिवस कब और क्यों होता है, हैंडवाश डे, संविधान दिवस, मतदाता दिवस, पर्यावरण दिवस, मजदूर दिवस, मानवाधिकार दिवस आदि।
9. सौर परिवार एवं सभी ग्रहों के नाम, सूर्य क्या है, सूर्य से सबसे नजदीक एवं दूर ग्रह, पृथ्वी से सबसे नजदीक एवं दूर ग्रह, अपना ग्रह, अपने ग्रह का उपग्रह, ग्रहों एवं उपग्रहों की विशेषताएँ, वार्षिक गति तथा दैनिक गति एवं इसका प्रभाव, सबसे अधिक उपग्रह वाला ग्रह, उपग्रह विहीन ग्रह, लाल ग्रह, नीला ग्रह आदि।

10. पौधों के भोजन बनाने की प्रक्रिया प्रकाश संश्लेषण का वर्णन, पत्तियों के रंग हरा होने का कारण, आक्सीजन एवं कार्बनडाई ऑक्साइड की जानकारी एवं महत्व, पौधों का रसोईघर, पौधों का रसोईयाँ, पदार्थ की अवस्थाएँ आदि।
11. राज्य के बेसिक शिक्षा मंत्री, ज़िले के डी.एम., ज़िले के बी.एस.ए., ब्लॉक के बी.ई.ओ., ग्राम प्रधान के नाम आदि।
12. सम संख्याएँ, विषम संख्याएँ, अभाज्य संख्याएँ, गिनती, पहाड़े आदि।
13. वर्ष के दिन, माह के दिन एवं दिन बताने की युक्ति, सप्ताह के दिन, वर्ष के सभी महीनों के नाम, सप्ताह के दिनों के नाम, एक दिन में कितने घंटे, एक घंटे में कितने मिनट, एक मिनट में कितने सेकेंड, लीप ईयर, लीप ईयर कब होता है, क्यों होता है, क्या प्रभाव पड़ता है आदि।
14. अंग्रेज़ी एवं हिंदी में अपना परिचय देने का तरीका आदि।

उपरोक्त लिखित इन प्रश्नों के अतिरिक्त ऐसे तमाम प्रश्न शामिल किए गए जो स्कूली बच्चों को आसान लगें और उनसे संबंध स्थापित कर सकें। इन प्रश्नों को समसामयिक घटनाओं के आधार पर अद्यतन भी किया गया। कई प्रश्न समसामयिक से जुड़े होने के कारण उनका लगातार अद्यतन किया जाता रहा।

शोध का परिणाम

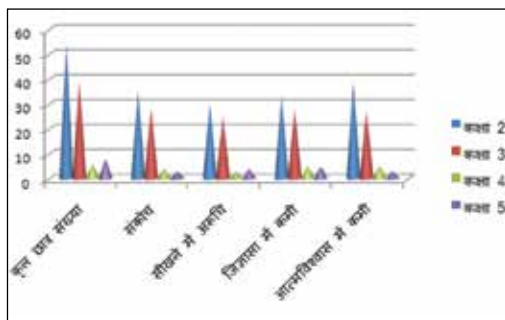
स्कूल में शोध के प्रयोग के बाद बच्चों में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिला। जो बच्चे डरे, सहमे और कमज़ोर थे, उन्होंने अन्य सहपाठियों और शिक्षकों के साथ सहज संवाद शुरू कर दिया। बच्चों को सामान्य अध्ययन के दर्ज़नों

प्रश्न याद हो गए जिससे उनके आत्मविश्वास में ज़बरदस्त वृद्धि हुई। कम सक्रिय रहने वाले बच्चे भी अधिक सक्रिय हो गए। कक्षा 1 जैसी छोटी कक्षा के बच्चों को भी अपने देश व राज्य की प्राथमिक जानकारी होने के साथ दूसरे सवालों के जवाब याद हो गए। बच्चों में प्रतिस्पर्द्धा का स्तर भी बढ़ गया। बच्चे प्रश्नों का जवाब देने की होड़ लगाते देखे गए। धीरे-धीरे अधिकांश बच्चे सरल एवं सहज हो गए। सामान्य ज्ञान के साथ विषयगत ज्ञान की जानकारी होने के कारण कक्षा शिक्षण के दौरान भी बच्चों में आत्मविश्वास जिज्ञासा का स्तर बढ़ गया। बच्चों की स्मृति एवं याद करने की क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। बच्चों पर इस शोध का कितना प्रभाव पड़ा, इसका आकलन करने के लिए कक्षा 1 को छोड़कर अन्य चारों कक्षाओं के बच्चे का विभिन्न सूचकों पर मूल्यांकन किया। आकलन के दौरान लिंगभेद यानी बालक-बालिका का भेद न कर बच्चों की संख्या पर केंद्र किया गया। आकलन के उपरांत इन सूचकों पर स्कूली बच्चों की स्थिति निम्नानुसार रही—

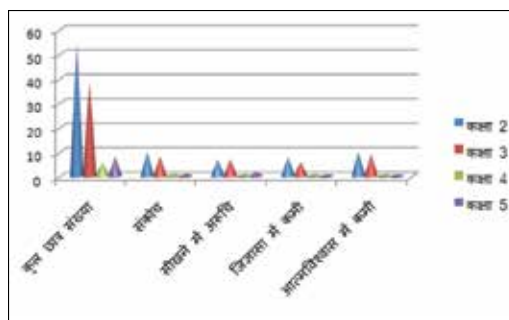
तालिका 1— शोध प्रयोग के पूर्व बच्चों की विभिन्न सूचकों की सापेक्ष स्थिति

विभिन्न सूचक	कक्षा 2	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
कुल बच्चे संख्या	54	39	6	8
संकोच	35	28	4	3
सीखने में अरुचि	30	25	3	4
जिज्ञासा में कमी	33	28	5	5
आत्मविश्वास में कमी	39	27	5	3

आरेख 1



आरेख 2



सामान्य अध्ययन के शिक्षण को लागू करने से पूर्व ग्रामीण क्षेत्र में स्थित प्राथमिक विद्यालय मलूकपुर में कक्षा 2 से 5 तक के स्कूली बच्चों की स्थिति विभिन्न सूचकों पर काफी कमतर थी। यह ऐसे सूचक थे जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान बच्चों के सीखने की गति को प्रभावित करते हैं। यह सर्वमान्य है कि उम्र के प्राथमिक पड़ाव या यूँ कह सकते हैं कि शुरुआती करीब 8 वर्ष की उम्र तक बच्चों के सीखने की गति काफी अधिक होती है। लेकिन जब बच्चा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से घिरा रहेगा तो उसकी सीखने की गति पर बुरा असर पड़ सकता है। मलूकपुर विद्यालय में भी ऐसा ही नजारा था। कक्षाओं के 50 फीसदी से अधिक

बच्चे जिज्ञासा, आत्मविश्वास, सीखने में रुचि व सक्रियता जैसे मानदण्ड में निम्न स्तर पर थे। इसे देखते हुए सामान्य अध्ययन के शिक्षण को सुनिश्चित किया गया।

सामान्य अध्ययन के शिक्षण के लागू होने के करीब दो माह बाद स्कूली बच्चों में तुलनात्मक रूप से प्रशंसनीय सुधार दिखाई पड़ा। संकोच, सीखने में रुचि, जिज्ञासा व आत्मविश्वास में कमी जैसे मानदण्ड में उल्लेखनीय सफलता हासिल हुई। 50 फीसदी से अधिक बच्चों में यह कमियाँ दूर हो गई और वह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी करने लगे। राज्यमंत्री, जिला क्लेक्टर, सहायक निदेशक (बेसिक) महोदय के निरीक्षण के दौरान स्कूली बच्चों ने इन मानदण्ड पर शानदार प्रदर्शन कर उनकी प्रशंसा प्राप्त की। अगर आँकड़ों पर गौर करें तो स्पष्ट है कि प्रत्येक कक्षा के बच्चों में उल्लेखनीय सुधार दिखाई पड़ा। बालक हो या बालिका सभी में यह सुधार समान रूप से हुआ। सामान्य अध्ययन के शिक्षण के कारण बच्चों उनकी व्यक्तिगत कमियों को दूर करने में काफी हद तक सफलता मिली। स्कूल के बच्चों की संख्या में कम समय में काफी अधिक वृद्धि दर्ज की गई।

तालिका 2— सामान्य अध्ययन शिक्षण के लागू होने के बाद बच्चों की स्थिति

विभिन्न सूचक	कक्षा 2	कक्षा 3	कक्षा 4	कक्षा 5
कुल बच्चे संख्या	54	39	6	8
संकोच	10	8	1	1
सीखने में अरुचि	7	7	0	2
जिज्ञासा में कमी	8	6	0	0
आत्मविश्वास में कमी	10	9	0	0



सामान्य अध्ययन शिक्षण आरंभ होने के कुछ दिनों बाद बच्चे इस तरह करने लगते हैं विशेष कक्षा का संचालन

अप्रैल 2018 में इस विद्यालय के बच्चों की कुल बच्चे संख्या 67 थी जो सितंबर 2020 में 223 हो गई। इसके पीछे सामान्य अध्ययन के शिक्षण का भी हाथ रहा। आत्मविश्वास से लबरेज बच्चे गाँवों में स्वयं प्रचार का माध्यम बन गए।

निष्कर्ष एवं सुझाव

बाल केंद्रित शिक्षा और बच्चों का सर्वांगीण विकास प्राथमिक शिक्षा के मूल उद्देश्यों में शुमार है। प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ने के लिए किसी विशेष योजना या शिक्षण शैली की आवश्यकता हमेशा से रही है। बाल विकास एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए नित नए शोध एवं प्रयोग किए जा रहे हैं। इन प्रयोगों, नवाचारों एवं शोधों का उद्गम विद्यालय में ही बच्चों की जरूरत के अनुसार होता है। यह शोध निश्चित रूप से प्राथमिक स्तर के बच्चों के आत्मविश्वास, जिज्ञासा एवं अधिगम स्तर में वृद्धि के लिए बेहद उपयोगी है। बच्चों की स्मरण शक्ति पर भी अत्यंत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। स्मरण शक्ति तेज होने लगती है। परस्पर शैक्षिक

प्रतिस्पर्धा बढ़ने लगती है। प्रतिभाशाली बच्चों के सीखने का स्तर जहाँ काफ़ी अधिक हो जाता है वहीं धीमी गति से सीखने वाले बच्चों में भी उत्सुकता पैदा होती है। वे सीखने एवं समझने की दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति करने लगते हैं। प्रारंभिक चरण के पश्चात् जब बच्चे इस विशेष कक्षा में पूर्ण मनोयोग से भाग लेते हैं तो उनमें नेतृत्व की भावना भी विकसित होने लगती है। बच्चे न केवल कक्षा का संचालन करने लगते हैं बल्कि वह अन्य स्कूल कार्यक्रमों में भी नेतृत्वकारी भूमिका में आ जाते हैं। नेतृत्व एवं परस्पर सहयोग से स्कूल का वातावरण भी बेहतर होता है। सिर्फ 15 दिन में ही स्कूल के वातावरण में आश्चर्यजनक बदलाव दिखने शुरू हो जाते हैं। इस कारण सामान्य अध्ययन प्राथमिक एवं प्रयोग करने पर उच्च प्राथमिक स्तर के स्कूलों के लिए भी काफ़ी लाभप्रद हैं। बच्चे जब घर पहुँचकर अपने से बड़ी कक्षा वाले स्कूली बच्चों से यह सवाल पूछते हैं तो वे कई सवालों का जवाब नहीं दे पाते हैं इससे भी बच्चों को अपनी विजय का एहसास होता है और उनका अंतर्मन प्रफुल्लित हो जाता है। स्कूल में इस सूक्ष्म शोध के बेहद प्रभावकारी परिणाम सामने आए हैं।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों में भाषा विकास एवं इसके माध्यम से संवाद एवं उत्तम संचार शैली का विकास इस शोध के माध्यम से काफ़ी सरल एवं सहज हो गया। भाषा प्रत्येक विषय का मूल आधार है तो सामान्य अध्ययन शिक्षण पर आधारित इस प्रयोग से भी यह अवधारणा जुड़ी है। बच्चे हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अन्य विषयों के प्रति अपनी समझ बढ़ी आसानी से विकसित कर लेते हैं। उनकी अपनी भाषा में इस शोध के प्रयोग से यह बेहद आसान हो

जाता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अपने शिखर पर पहुँचती हुई दिखने लगती है।

सामान्य अध्ययन के शिक्षण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके लिए किसी विशेष सहायक सामग्री की आवश्यकता नहीं है। बच्चों के पास यदि कॉपी, पुस्तक या पेन भी नहीं है तो भी शोध का प्रयोग हो सकता है। यह मौखिक प्रकृति का प्रयोग है। इसमें संवाद स्थापना ही सबसे बड़ा आधार है। इस सूक्ष्म शोध को स्कूल में बेहद सरलता से लागू किया जा सकता है। शिक्षक व बच्चे के मध्य संवाद पर आधारित इस शोध के लिए किसी विशेष तैयारी की भी आवश्यकता नहीं है।

इस शोध की आवश्यकता उस प्रत्येक कक्षा एवं उस प्रत्येक बच्चे के लिए है जिसमें भय, संकोच, आत्मविश्वास व जिज्ञासा के स्तर में कमी देखी गई हो। इसका प्रयोग प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर

की कक्षाओं के लिए किया जा सकता है। यह सामान्य ज्ञान के साथ ही अन्य विषयों के लिए भी उपयोगी है। सामान्य अध्ययन के शिक्षण की क्लास में सामान्य ज्ञान के अलावा गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण, भूगोल, अंग्रेजी जैसे विषयों के प्रश्न भी शामिल होते हैं। जब बच्चे इन विषयों से संबंधित प्रश्नों एवं कुछ प्रसंगों के बारे में पहले से ही जानते होते हैं तो कक्षा शिक्षण के दौरान इन विषयों के टॉपिक के साथ तालमेल बैठाने में अधिक आसानी होती है। बच्चे अवधारणा को तुलनात्मक रूप से अधिक बेहतर ढंग से सीखते हैं। इन विशेषताओं के कारण सामान्य अध्ययन के शिक्षण से बच्चों की जिज्ञासा, आत्मविश्वास, सीखने में रुचि व संकोच को दूर करने के अलावा अन्य विषयों के अध्ययन में भी उपयोगी सिद्ध हुई है।

संदर्भ

पाठक, पी.डी. 1982. *शिक्षा मनोविज्ञान*. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

पाल, एस.के. गुप्त, लक्ष्मी नारायण और मदन मोहन. 2006. *शिक्षा के सिद्धांत और आधार*. न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद.